

भारत के सांस्कृतिक उत्थान में कुंभ का महत्त्व: प्रयागराज के विशेष संदर्भ में

बाल गोविंद ¹, डॉ. कुमार अमित ², रितांशु तिवारी ³

¹ शोधार्थी, भूगोल विभाग, दयानंद एंग्लो-वैदिक (पीजी) कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

² एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, दयानंद एंग्लो-वैदिक (पीजी) कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

³ शोधार्थी, भूगोल विभाग, जनता महाविद्यालय पी०जी० कॉलेज अजीतमल औरैया, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सारांश

‘कुंभ’ पर्व आयोजन भारत के सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, यह आयोजन न केवल धार्मिक क्रियाओं का आयोजन है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर, परंपराओं और विविधताओं का जीवंत उदाहरण भी है। प्रयागराज, जिसे त्रिवेणी संगम के रूप में जाना जाता है, कुंभ मेले का प्रमुख स्थल है, जहाँ करोड़ों श्रद्धालु एवं पर्यटक एकत्र होते हैं। इस आयोजन के माध्यम से भारत की धार्मिक एकता, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक धारा को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित किया जाता है। कुंभ आयोजन भारतीय समाज में सांस्कृतिक आदान-प्रदान, बंधुत्व और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देता है, जो भारतीय सभ्यता को गहराई से प्रतिबिम्बित करता है। यह न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्निर्माण, सामाजिक समरसता, और जन जागरूकता का भी आधार बनता है। कुम्भ यगों-युगों से इसी आध्यात्मिक चेतना को प्रकट करने के प्रमुख अवसर के रूप में चला आ रहा है। ‘कुम्भ’ नाम के पीछे चाहे जिन-जिन घटनाओं का वर्णन किया जाए लेकिन कुम्भ भारतीय अध्यात्म परम्परा और संस्कृति का वह घड़ा है जिसमें सभी आकर समाहित हो जाते हैं। प्रयागराज का कुंभ आयोजन भारतीय सांस्कृतिक उत्थान में एक प्रेरणा और गौरव का स्रोत है।

मुख्य शब्द :- कुंभ पर्व, प्रयागराज, सांस्कृतिक उत्थान, त्रिवेणी संगम, भारतीय संस्कृति, धार्मिक समरसता, सामाजिक एकता, आध्यात्मिक यात्रा, सांस्कृतिक धरोहर, भारतीय परंपराएँ

प्रस्तावना

भारत की संस्कृति अत्यधिक विविध और समृद्ध है, जिसमें विभिन्न धर्म, जाति, परंपराएँ, और रीति-रिवाज समाहित हैं। भारतीय संस्कृति का आधार उसके आध्यात्मिक और धार्मिक पहलुओं में निहित है। इस सांस्कृतिक धारा में कुंभ आयोजन एक अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय समाज की एकता, सहयोग और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। कुंभ आयोजन एक प्राचीन भारतीय पर्व है, जो प्रत्येक चार वर्ष में चार प्रमुख पवित्र नदियों के संगम स्थलों—प्रयागराज (इलाहाबाद), हरिद्वार, उज्जैन, और नासिक में आयोजित होता है। इनमें से प्रयागराज का कुंभ आयोजन विशेष रूप से ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रयागराज का कुंभ आयोजन न केवल करोड़ों तीर्थयात्रियों के लिए मोक्ष प्राप्ति का अवसर होता है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का जीवंत उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। यहाँ एक ओर जहाँ धर्म, श्रद्धा और विश्वास का संगम होता है, वहीं दूसरी ओर यह सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय एकता का एक प्रतीक भी है।

कुंभ आयोजन भारतीय संस्कृति के उत्थान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि सांस्कृतिक पुनर्निर्माण, सामाजिक समरसता, और जन जागरूकता का भी आधार बनता है। प्रयागराज का कुंभ आयोजन भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और प्रचार-प्रसार में एक अनूठा अवसर प्रदान करता है, जिससे भारत की प्राचीन परंपराओं और संस्कृति को दुनिया भर में पहचान मिलती है। वस्तुतः ‘कुम्भ’ यह शब्द ही

अपने आप में इसके अर्थ गाम्भीर्य को समाहित किए हुए है। कुम्भ को कुछ घटनाओं या कुछ विशेष परम्पराओं की दृष्टि से नहीं समझा जा सकता। कुम्भ एक विशेष खगोलीय अवसर पर उपस्थित होने वाला भारतीय संस्कृति का समुच्चय है। कुम्भ में वे परम्पराएं भी हैं जो उसके उद्गम से प्रारम्भ हुई हैं और वे परम्पराएं भी हैं जो समय-समय पर प्रारम्भ हुई हैं। कुछ परम्पराओं का उदय हुआ और काल के प्रवाह में अस्त हो गई, भविष्य में अनेक अस्त हो जाएंगी और अनेक नई जुड़ जाएंगी।

कुम्भ पर्व की मूल चेतना

डा. चंद्र प्रकाश सिंह जी के अनुसार- “कुम्भ में श्रुति भी है और स्मृति भी है, आगम भी है और निगम भी है, शास्त्र भी है और लोक भी हैं, शैव, शाक्त और वैष्णव भी है, नगर भी है और ग्राम भी है, धनाढ्य भी है और गरीब भी है, सन्त भी है और असन्त भी है, साधक भी है और बाधक भी है। यदि एक वाक्य में कहा जाए तो जैसे महाभारत के विषय में कहा जाता है कि जो कुछ भारत में है वह सब कुछ महाभारत में है, वैसे ही कुम्भ है।” कुम्भ का अमृत उसके मंथन से निकलता है, इसलिए इसे समुद्र मंथन की घटना से जोड़ा गया है। जैसे विभिन्न नदियों का प्रवाह समुद्र में समावेशित होता है वैसे ही विभिन्न परम्पराओं का कुम्भ में समावेशन है। कुम्भ का स्वभाव समावेशी है। समावेशिकता ही कुम्भ की विशेषता है।

कुम्भ का अर्थ विविधताओं का सम्मिलन है। कुम्भ अमरत्व का प्रतीक है। समग्र भारत को भावनात्मक रूप से एक सूत्र में पिरोने का कार्य हमारे तीर्थों द्वारा किया जाता है। भारत की एकात्मता केवल संवैधानिक आधार पर नहीं खड़ी है इसके पीछे वह भावना है जो हमारी आध्यात्मिक चेतना के साथ एकाकार है। कुम्भ यगों-युगों से इसी आध्यात्मिक चेतना को प्रकट करने के प्रमुख अवसर के रूप में चला आ रहा है। 'कुम्भ' इस नाम के पीछे चाहे जिन-जिन घटनाओं का वर्णन किया जाए लेकिन कुम्भ भारतीय अध्यात्म परम्परा और संस्कृति का वह घड़ा है जिसमें सभी आकर समाहित हो जाते हैं।

प्राचीन और अर्वाचीन सभी आध्यात्मिक चिन्तनों, साधना परम्पराओं और लोक-चेतना के संगम को ही कुम्भ कहते हैं। जो भारत की भूमि में उत्पन्न हुआ वह शनैः-शनैः इस कुम्भ में समाहित होता रहा है, हो रहा है और होता रहेगा। यह भारत का कुम्भ है और यह कुम्भ ही भारत है। कुम्भ आयोजन यानी मिलन जिसमें प्राथमिक है गंगा यमुना और सरस्वती का मिलन। उसके बाद संतों, साधुओं, संन्यासियों और आचार्यों का मिलन। फिर संतों से समाज का मिलन तथा समाज का समाज से मिलन। इन सब का सूत्र हैं अध्यात्म, धर्म और उपासना पद्धतियाँ। यह मिलन ही आयोजन है और इस मेले का आधार यदि गंगा, यमुना सरस्वती हैं तो धुरी हैं संत, संन्यासी और साधु।

इसी संदर्भ में स्कन्दपुराण में एक श्लोक वर्णित है-

"गंगायमुनाभ्यां संगमं पुण्यं शुद्धं महात्मनं।

प्रयागे स्नानमाचरेत् पापं नश्यति निश्चितम्॥"

(स्कन्द पुराण, उत्तरखंड, अध्याय 31, श्लोक 9)

अर्थात्- कि प्रयाग के संगम स्थल (गंगा और यमुनाजी के संगम) में स्नान करने से व्यक्ति के सभी पाप समाप्त हो जाते हैं और उसे शुद्धि और पुण्य की प्राप्ति होती है। यह स्थान अत्यंत पवित्र है और धार्मिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

कुम्भ पर्व: ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व

कुंभ पर्व आयोजन का मूल हिन्दू धर्म के प्रमुख ग्रंथों—महाभारत और विष्णु पुराण से जुड़ी हुई है। इनके अनुसार, जब देवताओं और असुरों के बीच 'दधिची कूट' (समुद्र मंथन) हुआ था, तो उसमें अमृत कलश का जन्म हुआ। यह अमृत कलश देवताओं और असुरों के बीच युद्ध का कारण बना, और इसी युद्ध के दौरान अमृत के कुछ बूँदें पृथ्वी पर गिरी थीं। इन बूँदों के गिरने के स्थानों पर कुंभ आयोजन आयोजित किया जाता है।

यहां एक श्लोक का उदाहरण दिया जा रहा है, जो इस घटना से संबंधित है:

"तस्मिन्हि समुद्रमथने महत्त्वे विष्णुशक्त्या समुद्रं मन्थयित्वा अमृतं प्राप्तं।

तत्र गत्वा नन्दनकाननं च, चत्वारो हर्षितं गात्राणि सम्प्राप्तवन्ति।"

[भागवतमहापुराण (8.6.21)]

तथा रामचरितमानस में भी इसका गुणगान किया गया है-

संगम सिंहासनु सुठि सोहा। छत्रु अखयबटु मुनि मनु मोहा॥

चवैर जमुन अरु गंग तरंगा। देखि होहिं दुःख दारिद भंगा॥४॥

(रामचरितमानस, कवितावली, 58)

भावार्थ

गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम ही उसका अत्यन्त सुशोभित सिंहासन है। अक्षयवट छत्र है, जो मुनियों के भी मन को मोहित कर लेता है। यमुनाजी और गंगाजी की तरंगें उसके (श्याम और श्वेत) चँवर हैं, जिनको देखकर ही दुःख और दरिद्रता नष्ट हो जाती है॥

इस संदर्भ में प्रयागराज को प्रमुख रूप से "संगम स्थल" माना जाता है, जहां गंगा, यमुन और सरस्वती नदियाँ मिलती हैं, जिसे "त्रिवेणी संगम" कहा जाता है। यहाँ स्नान करने से व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है, और यह स्थल हिन्दू धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। कुंभ आयोजन का आयोजन सर्वप्रथम मौर्य काल में हुआ था, और इसके बाद यह हिन्दू समाज का एक महत्वपूर्ण पर्व बन गया। समय के साथ कुंभ आयोजन न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना बन गया।

प्रयागराज और कुंभ आयोजन का विशिष्ट संदर्भ

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश राज्य का एक ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण नगर है। यह नगर विशेष रूप से त्रिवेणी संगम के लिए प्रसिद्ध है, जहां तीन पवित्र नदियाँ—गंगा, यमुन और पौराणिक सरस्वती—मिलती हैं। इस संगम स्थल को हिन्दू धर्म में अत्यधिक पवित्र माना जाता है, और इसे मोक्ष प्राप्ति के लिए आदर्श स्थान माना जाता है। प्रयागराज में प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाला कुंभ आयोजन न केवल भारत, बल्कि पूरे विश्व के सबसे बड़े धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों में से एक है। यह आयोजन प्रयागराज को न केवल एक तीर्थ स्थल के रूप में, बल्कि भारतीय संस्कृति और धार्मिक आस्था के केंद्र के रूप में भी प्रस्तुत करता है।

एक वैनेशियन यात्री निकोलाई मनुची के 17वीं शताब्दी के यात्रा विवरण में प्राप्त तत्सम्बन्धी उल्लेख से यह आयोजन स्वतः ही निर्मूल हो जाती है। निकोलाई मनुची (1638-1717 ई.) इटली का मूल निवासी था और 1656 ई. में भारत आया था। उसी वर्ष वह दाराशिकोह की सेना में भर्ती हो गया। बाद में वह आमेर के राजा जयसिंह तथा औरंगजेब के

पुत्र शाह आलम की सेना में भी कुछ वर्ष रहा और भारत के अधिकांश हिस्सों में उन उन सेनाओं के साथ विभिन्न सैनिक अभियानों में सम्मिलित रहा। 1686 ई. में उसने शाहआलम के पास से भागकर मद्रास प्रेसीडेंसी में शरण ली और चिकित्सक का कार्य करने लगा। उसने ब्रिटिश प्रेसीडेंसी के लिए दुभाषिये का कार्य भी किया था। वर्ष 1717 ई में हिन्दुस्तान में ही जराकी मृत्यु हो गयी। उसने 'स्टोरियो डु मोगोर' नाम से प्रकाशित अपनी पुस्तक में मुगल साम्राज्य का विस्तृत विवरण लिखा है। इस पुस्तक में मनुची अपने इलाहाबाद के किले में जाने के प्रसंग में लिखता है-

"Ganges... Jamuna...besides these rivers, there issue from the rock, on which stand the fort and its outwork a petty stream with blue water, which is called the Tirth; it goes by a straight course between the two rivers until it flows with them. Every five years, multitudes of Hindus assemble and wash their bodies in the said stream."

मनुची का उपर्युक्त इलाहाबाद-भ्रमण वर्ष 1665 ई. से 1675 ई. के मध्य हुआ था। स्पष्ट है कि उस समय भी पाँच वर्ष के अन्तराल (या छोटे वर्ष) पर एक विशिष्ट स्नानपर्व प्रचलन में था।

कुंभ आयोजन और सांस्कृतिक उत्थान

शास्त्रों में, विशेष रूप से विष्णु पुराण और माहात्म्य पुराण में कुंभ आयोजन का वर्णन किया गया है। यहाँ एक श्लोक है जो कुंभ आयोजन के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट करता है:

"कुंभे संगमगच्छत्याः पुण्यं तीर्थनिवासिनीम् ।

पापहर्मं प्रपद्यंति संतानं सदा स्वधर्मिणम् ॥"

(स्कन्द पुराण, उत्तरखंड, अध्याय 31, श्लोक 20)

अर्थ: कुंभ के आयोजन से संगम स्थल पर स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। यह तीर्थ स्थान पापों से मुक्ति और आत्मशुद्धि का माध्यम है। यहाँ पर आने वाले श्रद्धालु न केवल धार्मिक आस्था को प्रकट करते हैं, बल्कि वे अपनी सांस्कृतिक परंपराओं और सामाजिक एकता को भी बढ़ावा देते हैं।

धार्मिक आयोजन, किसी व्यक्ति समूह के सामाजिक और सांस्कृतिक एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत प्रजाति, क्षेत्र, भाषा, पन्थ और जाति आदि की विविधता के लिए प्रसिद्ध है। यह भारतीय जनमानस की मूलभूत एकता के विचार का अत्यन्त महत्वपूर्ण वाहक का काम करती हैं। इसी सन्दर्भ में एम०एन० श्रीनिवास ने लिखा है कि- "भारत की एकता की अवधारणा मूलरूप से धार्मिक अवधारणा है।" कुम्भ मेले में लोगों के लगातार आवाजाही से इस क्षेत्र में व्यापार की गतिविधियाँ तेज हो जाती हैं। लोगों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार की बाजारी व्यवस्था बन जाती है। वहा अस्थाई रूप से आश्रय, भोज्य, पूजा सामग्री आदि आवश्यकताओं के अलावा कई प्रकार के मनोरंजन भी सहायक व्यवसाय के रूप में खड़े हो जाते हैं। मेले में आये हुए लोगो की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न संस्कृतियों के लोग जो कि भिन्न-भिन्न व्यवसायों से सरोकार रखते हैं की आवश्यकता होती है। यही मानवीय आवश्यकता की पूर्ति सांस्कृतिक एकीकरण का कारण बनती है क्योंकि हम जानते हैं कि एकीकरण की प्रक्रिया में विभिन्न सांस्कृतिक समूह रहते तो हैं साथ-साथ लेकिन सबों को अपना अलग-अलग अस्तित्व भी वजूद में रहता है, और कुम्भ मेले में ऐसी ही दृश्य उपस्थित होती है। प्रयाग का कुम्भ आयोजन एक धार्मिक पर्व है और सांस्कृतिक लक्षणों की तरह धार्मिक पर्वों में भी फैलने की प्रवृत्ति होती है। यह फैलाव लम्बवत और क्षैतिज दोनों प्रकार से होता है। क्षैतिज फैलाव की प्रक्रिया में परिणामजनक संशोधन का प्रसार, आत्मसात्तीकरण और एकीकरण जैसी प्रक्रियाओं की भूमिका होती है। परिणाम स्वरूप धार्मिक पर्व के क्षेत्रीय स्वरूपों का विकास होता है। ऐसी ही स्थिति प्रयाग में लगने वाले कुम्भ मेले

की होती है जिसमें करीब-करीब पूरे भारतीय संस्कृति जो कि विविधता से परिपूर्ण आपस में मिलती, आपसी सांस्कृतिक तत्वों का आदान-प्रदान करती जिसका प्रतिफल सांस्कृतिक एकीकृत व्यवस्था के रूप में हमारे सामने होती है।

सांस्कृतिक विविधता में एकता के महत्वपूर्ण तत्वों की खोज की संभावना को देखते हुए समय-समयान्तर पर विविध विद्वानों द्वारा भिन्न-भिन्न विचारधारायें प्रकट की जाती रही है। साथ ही इसके पुण्यताप और एकीकरण के महात्म्य की परिकथाओं का भी समय-समय पर प्रसार किया जाता रहा है। गवेषणात्मक प्रवृत्ति के प्रकटीकरण स्वरूप भी कुम्भ मेले के परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण विचार प्रतिपादित किये जाते रहे हैं। गौ, गंगा, गायत्री सर्वत्र पवित्र मानी जाती हैं। कदाचित् इसीलिए भी विभिन्न संस्कृति को मानने वाले गंगा के पावन तट पर कल्पवास का संकल्प लेकर आत्मपूर्वाग्रहों से भी निजता का मार्ग खोजने का प्रयास करते हैं। वर्तमान एकीकरण की परिसंकल्पना में धार्मिक एकीकरण के अन्तर्गत हिन्दुओं के चार तीर्थ स्थल बद्रीनाथ (उत्तर), रामेश्वरम् (दक्षिण), जगन्नाथपुरी (पूर्वी), तथा द्वारिका (पश्चिमी) देश के चारों कोनों पर स्थित है जो भारत की धार्मिक एकता और अखण्डता के सबलतम प्रमाण है। कमोवेश इसी प्रकार हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक भारत की सांस्कृतिक एकीकरण एक जीवंत प्रतीक है। मोक्षदायिनी पवित्रतम् निधियों में सर्वोत्कृष्ट स्थान गंगा का ही निर्धारित किया जाता रहा है और इसी मीमांसा के अन्तर्गत कुम्भ का आयोजन इसकी वस्तुनिष्ठता पर वार-चांद लगा देता है। वर्तमान ज्ञान की दीर्घतम् प्रविधि में यह प्रश्न भी अक्षय बना रहा है कि सांस्कृतिक एकता के परिसंदर्भ में कुम्भ मेले की महती उपादेयता किस प्रकार की है। अपितु इस संदर्भ में विद्वानों के विचार भी अलग-अलग किन्तु महत्वपूर्ण अवश्य प्रतीत होते हैं। इस संदर्भ में मेरा यह विचार है कि भारत ही नहीं वरन् समस्त विश्व के सांस्कृतिक धरोहरों का प्रयाग में लगने वाला कुम्भ आयोजन ही पोषक है जिसके संरक्षण में आकर संस्कृतियों का तो पोषण होता ही है वरन् मानवता के मध्य परोपकार और कल्याण की भावना का भी सृजन होने लगता है। जो कहीं न कहीं धर्म प्रतिमानों को परोक्ष रूप में द्योतित करने का प्रयास भी करता है।

"प्रयागे स्नानमाप्नोति पुण्यं सर्वथा निश्चितम्।

पापक्षयं हि यः स्नाति तस्य मोक्षो भविष्यति ॥"

(पद्मपुराण)

भावार्थ:

जो व्यक्ति प्रयाग में स्नान करता है, उसे सर्वथा पुण्य की प्राप्ति होती है। वह सभी प्रकार के पापों से मुक्त होता है, और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस श्लोक में प्रयागराज के स्नान के महान पुण्य और धार्मिक महत्व को बताया गया है।

निष्कर्ष

प्रयागराज में कुंभ आयोजन भारतीय संस्कृति और धर्म के उत्थान में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह आयोजन न केवल देशभर से श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है, बल्कि यह विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं को एक मंच पर लाता है, जिससे भारत की धार्मिक विविधता की प्रसिद्धि बढ़ती है। कुंभ आयोजन भारतीय समाज में आस्था, समर्पण और अध्यात्मिक उन्नति का संदेश फैलाता है। कुंभ आयोजन भारतीय समाज की एकता और अखंडता का प्रतीक है। इस मेले में विभिन्न जाति, धर्म, और समाज के लोग एक ही स्थान पर आते हैं और अपनी आस्थाओं को एक साथ साझा करते हैं। इससे समाज में बंधुत्व और सामूहिक सहयोग की भावना को प्रोत्साहन मिलता है, जो भारतीय समाज की विशेषता है। प्रयागराज में आयोजित होने वाला कुंभ आयोजन सांस्कृतिक पर्यटन का महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। इससे न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है, बल्कि पूरे देश और विश्व में भारत की सांस्कृतिक धरोहर

को प्रस्तुत करने का एक अवसर मिलता है। कुंभ मेले के आयोजन से पर्यटन, व्यापार, और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है, जो भारत की आर्थिक स्थिति को मजबूत करता है।

भविष्य में, प्रयागराज का कुंभ आयोजन भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने और प्रचारित करने में और भी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसे एक वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव के रूप में देखा जा सकता है, जो भारत के सांस्कृतिक गौरव को चरम पर ले जाएगा और विश्व भर के लोगों को भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षित करेगा। इसके आयोजन में पारिस्थितिकी और सतत विकास को ध्यान में रखते हुए और अधिक सुधार किए जा सकते हैं, ताकि यह आयोजन और भी प्रभावी और पर्यावरण के अनुकूल बने।

संदर्भ

1. डा. चंद्र प्रकाश सिंह (निदेशक अरुंधती वशिष्ठ अनुसंधान पीठ-प्रयागराज) के साथ कुंभ के विषय पर बाल गोविंद द्वारा साक्षात्कार, 2 अप्रैल 2024
2. चंद्र प्रकाश सिंह, हिन्दू संस्कृति में राष्ट्रवाद, 2020, अरुंधती वशिष्ठ अनुसंधान पीठ, प्रयागराज
3. स्कन्द पुराण, उत्तरखंड, अध्याय 31, श्लोक 9
4. [भागवतमहापुराण (8.6.21)]
5. रामचरितमानस, कवितावली, 58
6. कुमार आदित्य, (2025) कुंभ का मानवशास्त्र, अनामिका प्रकाशन प्रयागराज
7. पृष्ठ संख्या 75, 76 व 88, इसका अंग्रेजी अनुवाद विलियम इनबिन ने किया था और यह पुस्तक मुगल इंडिया 1553-1708' नाम से पाँच भागों में रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के तत्वाकरण में वर्ष 1907 में प्रकाशित हुई थी। उपर्युक्त उद्धरण इस अंग्रेजी अनुवाद के भाग-2 के पृष्ठ संख्या 82 से लिया गया है।
8. स्कन्द पुराण, उत्तरखंड, अध्याय 31, श्लोक 20
9. एम. एन. श्रीनिवास (M. N. Srinivas) एक प्रसिद्ध भारतीय समाजशास्त्री और सामाजिक मानवविज्ञानी थे। उन्होंने "संस्कृतिकरण" (Sanskritization), "पश्चिमीकरण" (Westernization) और "धर्मनिरपेक्षता" (Secularization) जैसी अवधारणाओं को विकसित किया।
10. पद्मपुराण
11. "आधुनिक भारत में तीर्थस्थलों का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव" संस्कृति एवं पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
12. "भारतीय पर्यटन" ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य डॉ रामशंकर त्रिपाठी
13. "Ancient Indian Tourism and Economy" - A.L. Basham
14. "Religious Tourism and Cultural Heritage in India" - Ministry of Tourism, Government of India
15. "भारतीय संस्कृति और धार्मिक पर्यटन" डॉ रमेशचंद्र शर्मा.
16. "धार्मिक स्थलों का पर्यावरणीय योगदान" प्रो. राजेश वर्मा